hearyasamaj.org

प्रकाशन की तिथि 01.7.2015

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

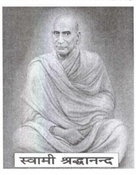

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12

भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 38 अंक 07 "शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है" वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

जुलाई 2015 विक्रम सम्वत् 2072 आषाढ़–श्रावण सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय आजीवन शुल्क : 300 रुपये

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ दूरभाष : 011–23847244

प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

गंगा तट का गरुड़ तथा शिव मन्दिर के हंस

लेखक – ब्रहादेव भाटिया

देव लोक से अजस्त्र प्रबल प्रवाह के रूप में सुरसीर गंगा का आगमन हुआ। गंगा के इस उग्र प्रबल प्रवाह को देवानुदेव भगवान शिव शंकर ने अपनी जटाओं में धारण किया। भगवान शिव की जटाओं से प्रकट होकर गंगा सप्त ऋषियों की कुटियों के तटों का प्रक्षालन कर पतितपावनी, जगहितकारणी रूप में इस वसुन्धरा पर प्रवाहित हो चली। सुरसरी गंगा पृथ्वी लोक में माता गंगा के रूप में वन्दनीया हो गई। माता गंगा ने भारतवर्ष को अपना आवास बनाया। गंगा तट अनेक देवी देवताओं का कर्म क्षेत्र बना। गंगा का पावन तट अनेक विचारकों दार्शनिकों, ऋषियों की तपो भूमि रहा है। गंगा तट के अध्यात्म पथ के साथक संसार में अनन्तकाल से मानवता तथा सदाचार का पथ उजागर करते आए हैं। वर्तमान में गंगा के दोनो तटों पर दूर तक बसे नगरों, ग्रामों में असंख्य लोग तथा जीव जन्तु जीवन निर्वाह के अवसर प्राप्त करते हैं। इन सब के क्रिया कलाप माता गंगा पर निर्भर हैं।

गंगा तट से कुछ दूर एक स्थान पर कुछ गांव थे नाम पसेना, गेलरु रलबान आदि। इन नामों का कोई अर्थ नहीं था। गंगा तट के पास कुछ बड़ा सा गांव था। नाम था शिव पुरी इस गांव में एक सुन्दर शिव मन्दिर था। सभी गांवों में हरे भरे घने वृक्ष थे तथा गांव हरे भरे खेतों से घिरे थे। इन गांवों को अनेक सुन्दर पक्षियों ने अपना पक्षी विहार बना लिया था। यह पक्षी यहां के ग्रामीण जीवन में रच बसे गए थे। सभी पक्षी दिन भर खेतों में रह कर कीट पतंग खाते तथा उपजों की रक्षा करते। सांझ होते ही सब पक्षी वृक्षों पर बनाए अपने नीड़ों में पहुंच जाते। प्रातः होने तक विश्राम करते। गंगा की धारा पर अनेक जल पक्षी कलोल करते, मन को लुभाते थे। जल पक्षियों में श्वेत धवल हंसों की राजसी आभा अदभुत थी। पक्षियों में एक मोहक नवेला गरुड़ भी था। गरुड़ प्रायः गंगा तट पर विचरण करते हुए दिखाई देता था। वह गंगा में प्रवाहित की गई पूजा की सामग्री को चोंच से पकड़कर गंगा से बाहर रखता रहता था। सांझ होते ही जल पक्षी शिव पुरी के तट पर आ जाते थे। गरुड़ शिव मन्दिर के पास एक पीपल के वृक्ष पर आ बैठता। गरुड़ पीपल पर बैठ कुछ बोलने लगता था। गरुड़ की वाणी सुन हंस शिव मन्दिर के पास जाते। हंस तथा गरुड़ कुछ समय तक बोलते रहते। परस्पर कुछ बोलने के पश्चात विश्राम करते। लोग उन्हें गंगा तट का गरुड़ तथा शिव मन्दिर के हंस कहते।

गांवों में प्रातः का आगमन बड़ा मनोहारी होता। रात भर गंगा से आती शीतल पवन, हर फूल पत्ती को, अपनी ओस से धो जाती। पौ फटते ही वृक्षों के नीड़ों से पक्षियों की चहकार सुनाई देने लगती। कृषक मुँह अंधेरे अपने खेतों की ओर चल देते। सूर्य की पहली किरण के आते ही सब पक्षी अपना नीड़त्याग आकाश में पहुंच कलरव कलोल करने में मग्न हो जाते थे। जल पक्षी गंगा में तैरने में व्यस्त हो जाते थे। गरुड़ पीपल से कुछ कहता गरुड़ की वाणी सुन हंस गंगा में तैरने पहुंच जाते थे। प्रातः काल की बेला में माता गंगा की धारा पर जल पक्षियों संग तैरते श्वेत हंसों की शोभा अनुपम होती थी। गरुड़ पक्षी मन्दिर के पास गंगा तट पर विचरण करता तथा पुजारियों द्वारा प्रवाहित पूजा सामग्री को अपनी चोंच से बीन कर गंगा तट से दूर जा रखता। गंगा की धारा को स्वच्छ करने के पश्चात, अनेक दूर पास के स्थानों तक गरुड़ उड़ कर जाता था। आकाश में चहकते गाते पक्षियों संग गंगा के अनेक जल पक्षी भी अपना स्वर मिलाते। प्रातः काल की शीतल पवन में पक्षियों के समवेत स्वरों संग प्रकृति नृत्य करती प्रतीत होती। लोगों का विश्वास था कि प्रातः सब पक्षी मिल कर शिव वन्दना करते हैं। मन्दिर में घंटियों मंजीरों की ध्वनि संग शिव वन्दना शुरू हो जाती थी। प्रकृति का सम्पूर्ण विस्तार दिव्यता का रूप लेता था।

एक दिन कुछ कौवे प्रातःकाल के इस दिव्यसंगीत में भाग लेने आ पहुंचे तथा कांव कांव करने लगे। उन की बेसुरी आवाज़ ने सब पक्षियों को स्तब्ध कर दिया। पूर्ण नीरवता छा गई। मौन को देख कौवे कहीं चले गए। सब पक्षियों ने पुनः अपना वृन्दगान शुरु किया। तुरंत कौवे भी आ पहुंचे। अपने बेसुरे पन से रंग में भंग डालने लगे। एक हंस उड़ा तथा कौवों के पास गया। उन्हें आदर पूर्वक समझाया कि कही और चले जाएं। कौवों को यह सलाह अपनी प्रतिष्ठा विरुद्ध लगी। कौवों ने सब पक्षियों संग गाने की हठ ठान ली। कौवों की हठ ने हंसों को असहज कर दिया। सारे हंस उड़े तथा उन्होंने अपनी चोंच से कौवों के पर कतर दिए। कौवे उड़ने में असमर्थ हो गए। वह धरती पर गिर कर अपने पंख मारने लगे।

सभी पक्षी प्रातः काल के विघ्न से मुक्त होकर बहुत प्रसन्न थे। अब हंस भी सब पक्षियों संग उड़ते हुए समवत स्वरों का साथ देने लगे। हंसों के उड़ने की चाल उड़ते पक्षियों के दल की शोभा बढ़ाने लगी। इस मनोहारी दृश्य को निहारने के लिए गरुड़ भी अपने पीपल पर आ बैठा। सहसा कुछ हंसों के स्वर बेताल होने लगे तथा उन की चाल बेडोल होने लगी। सब पक्षी चिन्तित हो उठे। गरुड़ भी अपने पीपल बैठा चकित था कि अब नया विघ्न कौन सा आ गया है। गरुड़ उड़ा तथा हंसों के पास गया। उनके असहज होने का कारण पूछा। हंसों ने नीचे पृथ्वी की ओर इशारा किया। नीचे का दृश्य ही हंसों को व्यथित कर देता था। नीचे वह कौवे पड़े थे जिन के पर हंसों ने कतर दिए थे। वह कौवे पृथ्वी पर पड़े अपने पर मार रहे थे कुछ दल दल में पड़े थे। उनके पास कुछ अवांछित जीव भी आ गए थे। वह कभी कभी अपनी भद्दी वाणी भी बोल रहे थे। इन पर दृष्टि पड़ते ही हंस विचलित हो उठते थे। उन की वाणी इन की उड़ान अपनी गरिमा खो बैठते थे। इस स्थति ने गरुड़ को अत्यन्त व्यथित कर दिया। हंसों का विचलित होना प्रातःकालीन दिव्य वातावारण को भंग कर देता था। गरुड़ ने कुछ देर विचारने के पश्चात बोलना शुरु किया "तुम सब तो हंस हो श्वेत, धवल। तुम उन की ओर क्यूं देखते हो जिन के पर तुमने कतर दिए हैं? न उन पर कतरे कौवों की ओर देखो न उन की ओर देखो जो अवांछित हैं, अनुपयुक्त हैं। उनको अपने ध्यान में भी मत लाओ यदि उन को ध्यान में रख कर कुछ बोलोगे तो तुम्हारी अपनी मधुर वाणी बिगड़ेगी तुम्हारी चाल भी बेडोल होने लगेगी। अपनी धवलश्वेत आभा की गरिमा खो बैठोगे तुम सब वृक्षों के नीड़ों में बैठे अपने बच्चों का ध्यान करो, यह तुम्हारी ही वाणी सुनकर प्यार की ऐसी वाणी बोलना सीखेंगे जिस से तुम सबका मान बढ़ेगा। नीचे की हरी भरी भूमि को देखो, यह तुम्हारी मातृ भूमि है। अपनी वाणी द्वारा अपनी मातृभूमि की हानि न होने दो मातृभूमि पर कृषक् साथ होकर

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

Thearyasamaj.org

सबके विकास में प्रयत्न हैं। ऐसी वाणी बोलो कि सब कृषकों का उत्साह बढ़े। नीचे माता गंगा के तट पर शिव मन्दिर है। अपनी मधुर वाणी द्वारा शिव वन्दना को जग व्याप्त कर दो। सभी हंस गरुड़ के वचन सुन मधुर वाणी बोलते हुए अपनी अद्भुत लय में उड़ चले। गरुड़ पीपल की डाली पर बैठ इस मोहक दृश्य का आनन्द लेने लगा।

हंस अपने शिव (लक्ष्य) की ओर उड़ते हुए आपस में कहने लगे हमारा गरुड़ कितना स्याना है। अपनी बात के औचित्य को कितने योग यत्न से हर व्यक्ति के मन में बिठा देता है। अब हम भी सदा सतर्क रहेंगे कि हमारी वार्ता में हमारे गरुड़ की मति का आभास मिले। उड़ते पक्षियों का सहगान से यह भाव प्रकट होने लगे –

आ गैरियत के परदे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें नक्शे दुई मिटा दें।
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ इक नया शिवालय इस देश में बना दें।
दुनिया के तीरथों में ऊंचा हो तेरा तीरथ।
दामाने आसमां से इस का कलस मिला दें।
हर सुबह उठके गाएं मन्तर वह मीठे मीठे।
सारे पुजारियों को मैं पीत की पिला दें।
शक्ति भी शान्ति भी भगतों के गीत में है
धरती के वासियों की तो मुक्ति प्रीत में है।

पक्षियों की चहकार के भाव देवलोक तक आनन्द का संचार करने लगे। देव के वासी भूलोक में गंगा की महिमा को देख कर गदगद हो गए। देव लोक से माता गंगा, गंगा तट के गांवों तथा शिव मन्दिर पर पुष्प वर्षा होने लगी।

ए–4/443 पश्चिम विहार
नई दिल्ली

विद्या से अभिमान न उपजे

– डॉ. शशि तिवारी

किसी समय की बात है कि गार्ग्य गोत्र का एक ब्राह्मण विद्या प्राप्त करने के बाद ग्राम में रहता था। उसकी माता का नाम बलाका था, इसलिए लोग उसे बालाकि नाम से जानते थे। गोत्र से गार्ग्य हो कर भी वह विद्या के मिथ्या अभिमान में चूर रहता था। वास्तव में उसने सम्यक् रूप से ज्ञान प्राप्त नहीं किया था। इसी कारण वह अपनी अविद्या को ही विद्या समझता था। बालाकि गर्वीला होने के कारण बिना अवसर देखे बहुत बोलता भी था।

उस समय काशी में अजातशत्रु नाम का एक राजा राज्य करता था। वह सत्त्वगुण–प्रधान वृत्तियों से सम्पन्न था। प्रजा में वह एक परम धार्मिक और तत्त्ववेत्ता ज्ञानी के रूप में जाना जाता था। एक बार गार्ग्य बालाकि भ्रमण करते–करते वाराणसी पहुंच गया। वह राजा अजातशत्रु से मिलने भी गया। काशिराज ने उसका यथोचित स्वागत और सत्कार किया। अपनी सेवा से संतुष्ट होकर बालाकि ने अजातशत्रु की जिज्ञासा के बिना उससे स्वयं ही कहा, 'राजन्! मैं तुम्हें ब्रह्म का उपदेश दूंगा।'

उन दिनों हज़ार तरह के राजकार्यों में व्यस्त रहे अजातशत्रु ने किसी तरह स्वयं को शिष्यत्व की मानसिकता में बदलते हुए गार्ग्य से कहा, 'भगवन्! आपने मुझको ब्रह्म का स्वरूप स्पष्ट करने की बात की है, इसलिए मैं आदरभाव से आपको सहस्र गाएं भेंट में देता हूं।'

उपदेश सुनने के लिए उत्सुक हुए राजा अजातशत्रु को गार्ग्य ने अपना वक्तव्य उसी क्षण देना प्रारंभ किया। उसने कहा, 'यह जो आदित्य में पुरुष है, इसी की मैं ब्रह्म के रूप में उपासना करता हूं।' अजातशत्रु ने कहा, 'नहीं, नहीं, इस विषय में बात मत कीजिए।' राजा के कहने का तात्पर्य था कि 'यदि तुम कोई अन्य ब्रह्म जानते हो, तो उसका निरूपण करो, जिसे मैं पहले से ही जानता हूं, उसका नहीं'।

इसके बाद गार्ग्य ने कहा, 'राजन्! यह जो चन्द्रमा में पुरुष है, इसी की मैं ब्रह्म के रूप में उपासना करता हूं।' पुनः अजातशत्रु ने उसी तात्पर्य से कहा, 'नहीं, नहीं, इसकी बात मत कीजिए।'

गार्ग्य बालाकि एक के बाद एक–विद्युत् में, आकाश में, वायुमण्डल में अग्नि में, जल में पड़ने वाले प्रतिबिंब में, धूप में, छांव में, ध्वनि में, प्रतिध्वनि में, स्वप्न में, जागरण में, जागने वाले व्यक्ति की आंख में और अंदर व्याप्त रहने वाले पुरुषतत्त्व को ब्रह्म नाम देता गया। अजातशत्रु को इन सब तथ्यों से कोई संतोष नहीं हो रहा था, इसलिए वह साथ साथ ही इन सबका निराकरण भी करता गया।

अंततः गार्ग्य चुप को गया। तब अजातशत्रु ने कहा, 'बस, इतना ही क्या?गार्ग्य ने उत्तर दिया, 'हां, इतना ही है।' अजातशत्रु ने अपने विचार को प्रस्तुत करते हुए कहा, 'इतना जानने से तो ब्रह्म नहीं जाना जाता है। फिर तुम ऐसा गर्व क्यों करते हो कि मैं ब्रह्म का उपदेश करूंगा।' गार्ग्य ने मन ही मन अपना पराभव स्वीकार कर लिया था। वह राजा से प्रभावित हुआ। उसने अजातशत्रु से ही ब्रह्म का स्वरूप जानने का निश्चय किया।

आचार–विधि के अनुसार शिष्य को गुरु के समक्ष शिष्य की भावना से युक्त होकर जाना चाहिए। गीता (2.6) में अर्जुन ने भी यही कहा है, शिष्यस्तेऽहं शाधि मा त्वां प्रपन्नम्, अर्थात् 'हे ईश्वर! मैं आपका शिष्य हूं, आपकी शरण में आए हुए मुझ दास को उपदेश दीजिए।'

परंतु, गार्ग्य ने दो त्रुटियां की थीं। उसने न केवल स्वयं ज्ञान का मिथ्या अभिमान किया था, बल्कि जो शिष्यभाव से शरण में नहीं आया था, उसे स्वतः ही ज्ञान का उपदेश देने की बात की थी। अब वह अपने दोष समझ गया था। विधिपूर्वक शिष्य बनने के बाद, जानने की अभिलाषा से संपन्न होकर उसने राजा से कहा, 'मैं आपके प्रति उपसन्न (जिज्ञासा भाव से निकटतर) होना चाहता हूं, ठीक वैसे ही जैसे कोई शिष्य गुरु के प्रति होता है।' इस प्रकार गार्ग्य ने राजा अजातशत्रु से ही यह जाना कि 'ब्रह्म सचमुच आत्मानुभव के निरंतर विकास के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।'

बृहदारण्यक उपनिषद् (2.1) के इस उपाख्यान से सूचित होता है कि किसी भी व्यक्ति को यह दम्भ नहीं करना चाहिए कि उसे आत्मा का बोध पूरी तरह से हो चुका है। जो वास्तव में ज्ञानी होते हैं, वे अभिमान नहीं करते हैं। और विद्या का उपदेश तो उन्हें दिया जाना चाहिए जिनमें जिज्ञासाभाव हो। स्थान और काल की भी समीक्षा किए बिना विद्योपदेश नहीं करना चाहिए। अन्यथा 'अरण्य रोदन' की भांति सारे कर्म निष्फल हो जाते हैं।

तन के भीतर मन

तन के भीतर ही तो मन है
मन के भीतर अनन्त गगन है
कल्पना के पंख पसार कर
दूर दूर तक करे गमन है
तन के लिए बने दर्पण हैं
मन के भी कितने दर्शन हैं
तन का रूप भाये किसी का
मन में होती तब तड़पन है
सुगंध भरे यहाँ सुमन हैं
रूप सँवारे हुए उपवन हैं
वक्त किसका शृंगार करेगा
इसके लिए केवल स्वप्न हैं
प्रकृति का आँचल पवन है
गतिमान सबका जीवन है
वीणा के तारों में छिपकर
गुँथे हुए गीत–भजन हैं
झरें–झरें झरनों का समर्पण है
युग के द्वार पर खड़ी किरण है
मन मोर पपीहा बन नाचे
कुलाचे भरे जैसे हिरण है
पर्वत शिखर सभी मगन हैं
लेकिन मेरे तो व्याकुल नमन है
उस रचनाकार को ढूंढें कब से
कल्पनातीत जिसके सिरजन हैं।

– विजय गुप्त

समाचार

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा कार्यालय के लिए एक सीमित समय (पार्ट टाइम) के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता है जो कमला नगर स्थित कार्यालय में प्रातः 10 बजे से । बजे तक कार्य कर करें। मानदेय योग्यतानुसार दे दिया जायेगा। सरकारी नौकरी से अवकाश प्राप्त व्यक्ति को प्राथमिकता दी जायेगी।

–मंत्री

hearyasamaj.org

अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस (30 जुलाई) पर विशेष लेख

विश्व एकता से ही विश्व बन्धुत्व की अवधारणा साकार होगी!

– डा0 जगदीश गांधी, शिक्षाविद् एवं संस्थापक-प्रबन्धक
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

(1) व्यक्ति के जीवन में दोस्तों की अहमियत को समझते हुए और दोस्तों के प्रति आभार और सम्मान व्यक्त करने के उद्देश्य से अमेरिकी कांग्रेस ने सन 1935 में फ्रेंडशिप डे मनाने की घोषणा कर दी थी। अमेरिकी कांग्रेस के इस घोषणा के बाद हर राष्ट्र में अलग-अलग दिन फ्रेंडशिप डे मनाया जाने लगा। सन 2011 से संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस दिन को विश्व बन्धुत्व तथा एकरूपता देने और पहले से अधिक हर्मोन्लास से मनाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 30 जुलाई को अंतर्राष्ट्रीय फ्रेंडशिप डे घोषित कर दिया है। अधिकतर देशों में अंतर्राष्ट्रीय फ्रेंडशिप डे 30 जुलाई को मनाया जाता है। हमारा मानना है कि हमारी मित्रता का आधार एक युद्धरहित दुनिया के गठन का होना चाहिए। मित्रता का सबसे सर्वोच्च तथा परम लक्ष्य मानव जाति का भविष्य सुरक्षित बनाना है। आइये, पूरे विश्व के प्रति मित्र भाव विकसित करके वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को साकार करें।

(2) भारत में तो प्राचीन सभ्यता से ही दोस्ती की कई मिसालें देखने को मिलती हैं। राम जी ने दोस्ती के वास्ते ही सुग्रीव की मदद की थी तथा अमर्यादित हो चले समाज को मर्यादित बनाया। भगवान कृष्ण और अर्जुन तथा कृष्ण और सुदामा की दोस्ती की मिसाल तो जमाना आदि काल से देता आ रहा है। श्रीकृष्ण ने आपत्ति में पड़े अर्जुन की हर समय सहायता की तथा अर्जुन ने भी कृष्ण की इच्छा तथा आज्ञा को जानकर प्रभु का कार्य पूरे मनोयोग से किया और महाभारत का युद्ध करके धरती पर न्याय का साम्राज्य स्थापित किया। पश्चिम की तुलना में भारत में दोस्ती व्यापक पैमाने पर फैली हुई है। दोस्त से हम अपने दिल की सारी बातें कह सकते है। एकता, शान्ति, विश्वास और आपसी समझदारी के इस रिश्ते को दोस्ती कहते हैं। दोस्ती का रिश्ता जात-पांत, लिंग भेद तथा देशकाल की सीमाओं को नहीं जानता।

(3) त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव। तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो, तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो। तुम्ही हो साथी तुम्ही सहारे, कोई न अपना सिवा तुम्हारे, तुम्ही हो नैया तुम्ही खिवइया तुम्ही हो बन्धु.....। जो खिल सके न वह फूल हम हैं, तुम्हारे चरणों के धूल हम है, दया की दृष्टि सदा रखना। लोगों की सोच में प्यार का मतलब सिर्फ एक लड़के और लड़की के बीच के प्यार से रह गया है, लोग भूलते जा रहे हैं कि मनुष्य को पहला निश्चल, निःस्वार्थ और सच्चा प्यार सिर्फ और सिर्फ अपने माता-पिता से मिला है। विश्व एकता की आधारशिला पारिवारिक एकता है। दोस्ती करो ऐसी के दोस्त को देकर दुनिया भर की खुशियां उसके सारे गम चुरा लो। और दोस्ती निभाओ ऐसी कि वो ऊपर वाला भी नीचे आकर बोले मुझे भी अपना दोस्त बना लो। परमात्मा सबसे बड़ा मित्र है। परमात्मा से मित्रता निभाने के मायने है उसकी प्रत्येक रचना अर्थात सारी सृष्टि से प्यार करना।

(4) सच्चा मित्र जीवन का वह साथी है जो हर बुराई से हमें बचाता है :- मित्र के बिना जीवन अधूरा होता है। मित्र जीवन के रोगों की औषधि होती है, इसलिए मित्रता का बहुत महत्व है। हर प्राणी घर से बाहर मित्र की तलाश करता है। मित्र जीवन का वह साथी है जो हर बुराई से हमें बचाता है। हमें भलाई की ओर बढ़ाने के लिए साधन जुटाता है। पतन से बचाकर उत्थान के पथ पर लाता है, वह मित्र है। जीवन का सहारा, दुःख का साथी बनाते समय बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए। मित्रता के सच्चे भाव को समझना चाहिए। सच्चा मित्र हर सुख-दुःख में साथ देता है। स्वार्थी मित्र संकट के समय साथ छोड़ देते हैं। अतः मित्रता करने में सावधानी बरतनी चाहिए। तुलसीदास जी ने कहा है- जो मित्र दुःख होई न दुखारी, तिनहि विलोकत पातक भारी।। दोस्ती आदमी को भगवान का दिया हुआ एक विशेष वरदान है। आप एक दोस्त के साथ दुःख और सुख को साझा कर सकते हो। अच्छे दोस्त हमेशा एक सही तरह मार्गदर्शन देते हैं अच्छा दोस्त हमेशा निष्पक्ष और ईमानदारी से दुःख और सुख में अपने दोस्तों के साथ खड़ा रहता है। इसलिए हमें हमारे एक दोस्त को भेजने के लिए भगवान का शुक्रिया अदा करना चाहिए।

(6) आओ दोस्ती करें और उसे निभाये :- सिटी मोन्टेसरी स्कूल के बच्चों ने इण्डो-पाक चिल्ड्रेन्स फ्रेन्डशिप क्लब के अन्तर्गत 'आओ दोस्ती करें' की शुरूआत कारगिल युद्ध की विभीषका से भारत-पाक के बच्चों को उबारने के लिए की थी। इस अभियान के अन्तर्गत सी0एम0एस0 के बच्चों ने पाकिस्तान के 35 स्कूलों के बच्चों को पत्र लिखकर मित्रता कायम की। बच्चों ने पाकिस्तानी स्कूलों के पते इण्टरनेट से प्राप्त किये थे। दोनों देशों के बच्चों के बीच आपसी मित्रतापूर्ण भावनाओं को पत्रों के द्वारा एक-दूसरे से सीधे अभिव्यक्त करने की यह एक बहुत ही अच्छी व अत्यन्त प्रभावशाली व आश्चर्यजनक रूप से सफल शुरूआत है। इस 'आओ दोस्ती करें' प्रोजेक्ट के अन्तर्गत सी0एम0एस0 तथा पाकिस्तान के स्कूलों के कई छात्र दल पहले भी भारत तथा पाकिस्तान की यात्रायें कर चुके हैं।

(7) सी0एम0एस0 द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले 30 अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यक्रमों में देश-विदेश से पधारे प्रतिभागी छात्रों के साथ मित्रता करने के लिए सी0एम0एस0 के छात्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की तैयारी करते हैं। विदेशों से तथा भारत के विभिन्न प्रदेशों से आये छात्रों के साथ मित्रता का विचार छात्रों में एक नयी उमंग भर देता है। इन अंतर्राष्ट्रीय समारोहों में प्रतिभाग करने हेतु विश्व के अनेक देशों से आने वाले सभी प्रतिभागियों को सी0एम0एस0 के आदर्श वाक्य 'जय जगत' एवं भारत की संस्कृति और सभ्यता के साथ ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा विश्व बन्धुत्व की विचारधारा से भी परिचित कराया जाता है। इस प्रकार इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से यह एक ऐसा अद्भुत मंच बन जाता है जिसमें विश्व के अनेक देशों की संस्कृति और सभ्यता के साथ ही भारत की संस्कृति एवं सभ्यता का समागम भी होता है जो छात्रों को विश्व बन्धुत्व का अवसर प्रदान करता है। वास्तव में इस प्रकार के कार्यक्रम छात्रों के मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालते हैं और इस विचार को दृढ़ करते है कि मानवता एक है, ईश्वर एक है, विश्व एक है और यह पृथ्वी तथा प्रकृति सभी का पोषण समान रूप से करती है। ऐसे विचार भविष्य में 'विश्व एकता' 'विश्व शांति' तथा विश्व बन्धुत्व के उद्देश्य में सहायक होते है।

(8) विल्ड्रेन्स इण्टरनेशनल समर विलेज (सी.आई.एस.वी.) कैम्प :- जाति, रंग, नस्ल, राष्ट्रीयता और भाषाओं के आधार पर होने वाले भेदभाव को समाप्त कर पूरे विश्व में 'जय जगत' तथा विश्व बन्धुत्व की स्थापना करने के उद्देश्य से सी0एम0एस0 द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय बाल शिविर का आयोजन प्रत्येक वर्ष किया जाता है। इस अंतर्राष्ट्रीय समर विलेज कैम्प के माध्यम से ननें-मुन्हें 11 से 12 वर्ष आयु के बच्चों को एक स्थान पर 4 सप्ताह के लिए साथ-साथ इकट्ठा रखा जाता है। प्रत्येक डेलीगेशन में 2 लड़के, 2 लड़कियॉं और एक लीडर होता है। इससे विभिन्न संस्कृति, भाषा, सभ्यता, रीति-रिवाज में पले-बढ़े बच्चों के कोमल हृदय में आपसी भाईचारा, विश्व शांति तथा विश्व बन्धुत्व की भावना का समावेश होता है ताकि विश्वव्यापी दृष्टिकोण से परिपूर्ण ये बच्चे बड़े होकर मानव निर्मित सीमाओं से ऊपर उठकर एक विश्व की परिकल्पना को साकार करने में निश्चित ही सार्थक भूमिका निभाये। इंग्लैण्ड की विन्ड्रेन्स इन्टरनेशनल समर विलेज संस्था (सी0आई0एस0वी0) पूरे विश्व के अलग-अलग देशों में इन बाल शिविरों का आयोजन करती हैं। जिसमें सिटी मोन्टेसरी स्कूल के बच्चे विभिन्न देशों में आयोजित इस अन्तर्राष्ट्रीय बाल शिविरों में भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। सिटी मोन्टेसरी स्कूल द्वारा आयोजित इस शिविर में भारत के बच्चों के अतिरिक्त विभिन्न देशों के 10-12 देशों के बच्चे भाग लेते हैं।

(9) विश्व के 3 बड़े नेताओं ने विश्व में एकता, शांति तथा बन्धुत्व की स्थापना के लिए समय-समय पर प्रयास किया जिसके तहत :- (1) प्रथम विश्व युद्ध के समय 1919 में अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वुडरो विल्सन ने विश्व के नेताओं की एक बैठक आयोजित की, जिसके फलस्वरूप 'लीग ऑफ नेशन्स' की स्थापना हुई और सन् 1919 से 1939 तक विश्व में कोई अन्य युद्ध नहीं हुआ। (2) द्वितीय विश्व युद्ध के समय अमेरिका के ही तत्कालीन राष्ट्रपति श्री फ्रैन्कलिन रूजवेल्ट ने 1945 में विश्व के नेताओं की एक बैठक बुलाई जिसकी वजह से 24 अक्टूबर, 1945 को 'संयुक्त राष्ट्र संघ' (यू.एन.ओ.) की स्थापना हुई। प्रारम्भ में केवल 51 देशों ने ही संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर हस्ताक्षर किये थे। आज 193 देश इसके पूर्ण सदस्य हैं व 2 देश संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ.) के अवलोकन देश (ऑबजर्वर) हैं। फ्रैंकलिन रूजवेल्ट की इस पहल के कारण पिछले 7 दशकों से संसार में कोई और विश्व युद्ध नहीं हुआ।

(10) फ्रांस के प्रधानमंत्री श्री रावर्ट शूमेन ने यूरोपीय देशों के नेताओं की एक बैठक बुलाने की पहल की। इस पहली बैठक में 76 यूरोपीय संसद सदस्यों ने प्रतिभाग किया जिसके परिणामस्वरूप यूरोपीय यूनियन व 28 यूरोपीय देशों की एक 'यूरोपीय संसद' गठित की गई। इस यूरोपीय संसद की वजह से आज पूरे यूरोप में स्थायी एकता व शांति स्थापित है। आज यूरोपीय यूनियन में 28 यूरोपीय देश पूर्ण सदस्य राज्यों की तरह से हैं। यूरोपीय यूनियन के 18 देशों ने अपनी राष्ट्रीय मुद्रा को समाप्त कर 'यूरो' मुद्रा को अपनी राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में अपनाया है। इस बैठक को आयोजित करने की पहल करना यूरोप में स्थायी शांति व सभी देशों में एकता स्थापित करने के लिए श्री रावर्ट शूमेन का एक महत्वपूर्ण कदम था। यदि इन तीनों विश्व के राजनैतिक नेताओं ने इन बैठकों को आयोजित न की होती तो सोचिए आज विश्व की क्या दशा होती?

(11) आज भारत व पाकिस्तान की एकता समय की मांग है। क्योंकि इससे दोनों देशों के बीच का वैमनस्य, घृणा, हिंसा व दूरी समाप्त होगी व दोनों देशों की एकता से इनकी ताकत बढ़ेगी। भारत व पाकिस्तान के एक होने की सम्भावना को खोजने के लिए एक स्वर्णिम अवसर है। और यही जम्मू-कश्मीर समस्या का एकमात्र स्थायी हल भी है। हमारे सामने जर्मनी की एकता का, 1990 के शुरू का, सुन्दर उदाहरण है जबकि पूर्वी व पश्चिमी जर्मनी ने आपसी मतभेद भुलाकर आम

Thearyasamaj.org

दयानन्द ने इस ईश्वरोपासना की उपासना पद्धति में योगांग प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि को लक्ष्य में रखकर इसकी रचना की है। **इसमें आचमन मन्त्र, इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र, मार्जन मन्त्र, प्राणायाम मन्त्र, अघमर्षण मन्त्र, मनसापरिकमा मन्त्र, उपस्थान मन्त्र, गायत्री मन्त्र, समर्पण मन्त्र व नमस्कार मन्त्रों को सम्मिलित किया है।** कई कारणों से हम इसे उपासना की सर्वोत्तम पद्धति मानते हैं जिसको अपनाने से साधक वा योगाभ्यासी को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि होती है वा हो सकती है। समर्पण मन्त्र में महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि साधक ईश्वर को इस प्रार्थना से समर्पण करें–'**हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपया अनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थ काममोक्षाणां सद्य सिद्धिर्भवन्नेह।।**' अर्थात् **हे दया के सागर ईश्वर ! आपकी कृपा से अनेक प्रकार से जप व उपासना आदि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को आज ही प्राप्त हों।** इस प्रकार के शब्दों से ईश्वर को समर्पण शायद ही किसी प्रार्थना में किया गया हो, यही महर्षि दयानन्द रचित सन्ध्योपासना विधि का महत्व है। यदि किसी ने किया है तो यह महर्षि दयानन्द की सन्ध्यापद्धति का अनुकरण हो सकता है। दूसरा महायज्ञ '**दैनिक अग्निहोत्र**' है। इसका प्रातः व सायं अनुष्ठान करना भी प्रत्येक गृहस्थी का धर्म वा कर्तव्य है। इससे हम प्राण वायु को शुद्ध कर उसकी गुणवत्ता में वृद्धि करते हैं। अग्निहोत्र एक वैज्ञानिक उपक्रम है जिसे निवास गृह में करने से घर की श्वास प्रश्वास, रसोई आदि के कार्यों व वायु की उचित आवाजाही के न होने से वहां की दोषयुक्त वा प्रदुषित वायु गर्म होकर हल्की होकर घर से बाहर निकल जाती है और बाहर की शुद्ध वायु घर में प्रवेश करती है। अपने व परिवार के आरोग्य सहित पड़ोसियों को भी अग्निहोत्र से लाभ होता है। इससे असंख्य प्राणियों को नाना प्रकार के लाभ होते हैं। आने वाले समय में हम आशा करते हैं कि लोग अग्निहोत्र के लाभों से परिचित होकर इसे भी अपनायेंगे जिससे रोगों से मुक्त, शक्तिशाली व स्वस्थ विश्व परिवार का निर्माण हो सकेगा। इन्हीं पंक्तियों के साथ हम लेख को विराम देते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून, फोनः09412985121

चार वस्तुएँ चाहिए

एक राजा ने दूसरे देश के राजा पर असंख्य सेना लेकर आक्रमण किया। दोनों ओर की सेनाएँ अत्यन्त उत्साह से लड़ने लगीं। युद्ध प्रचण्ड हो उठा। सिर कट–कटकर भूमि पर गिरने लगे। थोड़ी ही देर में सुन्दर युवक भूमि पर लेटने लगे। आक्रमण करनेवाले राजा की सेना ने अब आगे बढ़ना आरम्भ किया और दूसरे राजा को भी कत्ल कर डाला। अब तो आक्रमणकारी राजा विजय का घोष करता हुआ आगे बढ़ा और उसने देश पर अधिकार कर लिया। परन्तु वह नहीं चाहता था कि मैं सदा यहीं रहूँ, प्रत्युत वह अपने देश को वापस लौटना चाहता था, इसलिए उसने पूछा कि क्या मृतक राजा के वंश में कोई व्यक्ति है। लोगों से पता लगा कि उसके वंश का कोई भी व्यक्ति जीवित नहीं है। हाँ, उसकी रिश्तेदारी का एक व्यक्ति है।

राजा– वह कहाँ रहता है?

उत्तर– वह संसार को त्याग चुका है और विरक्त होकर जंगल में रहता है।

राजा– उसे बुलाकर इस स्थान पर लाना चाहिए। कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति उस विरक्त को बुलाने जंगल में गये और उस विरक्त को कहा कि राजा आपको बुलाता है, परन्तु उसने जाने से इन्कार कर दिया। इसी प्रकार तीन–चार बार व्यक्ति उसके पास भेजे गये, परन्तु वह नहीं आया। अब तो राजा स्वयं उसके पास गया और कहने लगा। मैं किसी स्वार्थ से आपको नहीं बुलाता था, प्रत्युत इसलिए बुलाता था कि यह प्रदेश आपको दे दूँ।

विरक्त – मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है और न ही राज लेना चाहता हूँ।

राजा – यदि राज लेना नहीं चाहते तो कोई और वस्तु माँगो, मैं उपस्थित कर दूँगा।

विरक्त – नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए।

राजा– तो भी इस जंगल में रहते हुए कुटिया की, रक्षक की, खान–पान की वस्तुओं की– जिस वस्तु की आवश्यकता हो बतलाइए।

विरक्त – अच्छा आप बहुत आग्रह करते हैं तो मुझे निम्न वस्तुएँ दे दीजिए–

1. एक तो वह जीवन जिसके साथ मरना न हो।
2. दूसरी वह प्रसन्नता जिसके साथ रञ्ज–गम, कष्ट–क्लेश न हो।
3. तीसरी वह जवानी जिसके साथ बुढ़ापा न हो।
4. चौथी वह सुख जिसके साथ दुःख न हो।

राजा– इन चारों में से एक भी मेरे पास नहीं। ये तो मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर हैं। इन्हें तो केवल परमेश्वर ही दे सकता है, दूसरा कोई भी नहीं दे सकता।

विरक्त– मैंने भी इसीलिए अपने प्रभु का दामन पकड़ा है– उसका आश्रय लिया है और वही मुझे ये वस्तुएँ देगा। मुझे अन्य वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है।

– महात्मा आनन्द स्वामी जी

सुखी जीवन के सूत्र

1. याद रखिए यदि आपका पैर फिसल जाये तो आप सम्भल सकते हैं। परन्तु जुबान फिसल जाय तो गहरा घाव कर देती है।
2. समय से पहले और समय पर कार्य करने वालों को समय का अभाव कभी नहीं रहता है।
3. जब समय होता है, तब सोचते नहीं, जब सोचते है तब समय निकल चुका होता है।
4. उन्नति उसी की होती है, जो प्रयत्नशील होता है।
5. जो बीत गयी–उसे याद न करो, आने वाली समस्या का ख्याल न करो, वर्तमान को बर्बाद न करो।
6. क्रोध एक अग्नि है, जो दूसरो से पहले खुद को जला देती है।
7. ईश्वर की चक्की धीरे–धीरे चलती है, मगर बारीक–पीसती है।
8. हृदय (अन्तर आत्मा) मन्दिर है, उसे जलाना नहीं।
9. दुर्लभ कुछ भी नहीं, केवल दृढ़ संकल्प चाहिए।
10. तीखे और कड़वे शब्द कमज़ोर पक्ष के होते हैं और यही पहचान (निशानी) है।
11. ज्ञान सज्जन ही आत्मा परमात्मा के दर्शन करते हैं।
12. विचार करके काम करना बुद्धिमानी है, काम करके विचार करना नादानी है।

रोनक कुमार, नेत्रंग (भरूय)

सूर्य नित्य-निरंतर 'ओ३म्' का ही जाप करता अनादिकाल से चमक रहा है

नासा के वैज्ञानिकों ने अनेक अनुसंधानों के बाद डीप स्पेस में यंत्रों द्वारा सूर्य में हर क्षण होने वाली एक ध्वनि को रिकॉर्ड किया। उस ध्वनि को सुना तो वैज्ञानिक चकित रह गए, क्योंकि यह ध्वनि कुछ और नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की वैदिक ध्वनि 'ओ३म्' थी। सुनने में बिलकुल वैसी, जैसे हम 'ओ३म्' बोलते हैं, 'ओ' छोटा और 'म' लंबा। इस मंत्र का गुणगान वेदों में ही नहीं, हमारे अन्य ग्रंथों में भी किया गया है। आश्चर्य इस बात का था कि जो गहन ध्वनि मनुष्य अपने कानों से नहीं सुन सकता, उसको ऋषियों ने कैसे सुना। सामान्य व्यक्ति बीस मेगा हट्र्स से बीस हजार मेगा हट्र्स की ध्वनियों को ही सुन सकता है। इतनी ही हमारे कान की श्रवण शक्ति है। इससे नीचे या उससे ऊपर की ध्वनि को सुनना संभव ही नहीं है। इंद्रियों की एक सीमा है, उससे कम या ज्यादा में वे कोई जानकारी नहीं दे सकतीं।

वैज्ञानिकों का आश्चर्य असल में समाधि की उच्च अवस्था का चमत्कार था जिसमें ऋषियों ने वह ध्वनि सुनी, अनुभव की और वेदों के हर मंत्र से पहले उसे लिखा और 'महामंत्र' बताया। ऋषि कहते हैं, यह ओ३म् की ध्वनि परमात्मा एक पहुंचने का माध्यम है। यह उसका नाम है। महर्षि पतंजलि कहते हैं 'तस्य वाचकः प्रणव' अर्थात परमात्मा का नाम प्रणव है। प्रणव यानि 'ओ३म्' । प्रश्न उठता है कि सूर्य में ये ही यह ध्वनि क्यों हो रही है? इसका उत्तर गीता में दिया गया है। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं– जो योग का ज्ञान मैंने तुझे दिया, यह मैंने आदिकाल में सूर्य को दिया था।

देखा जाए तो तभी से सूर्य नित्य–निरंतर केवल 'ओ३म्' का ही जाप करता हुआ अनादिकाल से चमक रहा है। यह जाप सूर्य ही नहीं, संपूर्ण ब्रह्मांड कर रहा है। ऋषियों ने कहा था यह ध्वनि ध्यान में अनुभव की जा सकती है, लेकिन कानों से सुनी नहीं जा सकती । इसी ध्वनि को शिव की शक्ति या उनके डमरू से निकली प्रथम ध्वनि या अनहद नाद कहा जाता है जो हमारी चेतना की अंतरतम गहराइयों में भी गूंज रहा है।

जब हम 'ओ३म्' का जाप करते हैं, सबसे पहले मन विचारों से खाली होता है। उसके बाद जब ये जाप चलता रहता है, तब साधक के जाप की फ्रीक्वेंसी उस ब्रह्मांड में गूंजती 'ओ३म्' की ध्वनि की फ्रीक्वेंसी के समान हो जाती है। तब साधक ध्यान की गहराइयों में चला जाता है। इस अवस्था को वननेस या समाधि का अद्वैत कहा जाता है। ऐसे में मन, चेतना के साथ लीन हो जाता है।

सन साउंड ॐ को सुनने के लिए यहां क्लिक करें m.utube.com/watch?v=rfc8_1b890u

सुरक्षित जी के सान्निध्य में 'सहज ध्यान' कोर्स करने के लिए संपर्क करें yoga.bccl@timesgroup.com

Thearyasamaj.org

संस्कृत संगीत संध्या एवं सांस्कृतिक समारोह सोल्लास सम्पन्न

अध्यात्म पथ (पं.) मासिक पत्रिका एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में आर्यसमाज बी–2 जनकपुरी में विश्वशांति महायज्ञ, संस्कृत संगीत भजन संध्या एवं सांस्कृतिक समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अरूण सहारन ने की तथा इसके विशिष्ट अतिथि सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, डॉ. रमाकान्त शुक्ल एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार थे। समारोह का आयोजन सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर अध्यात्म पथ पत्रिका एवं 'ज्ञान गंगा' का लोकार्पण खचाखच भरे सभागार में विद्वत्जनों की उपस्थिति में हुआ।

प्रख्यात् संस्कृत विद्वान स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए अपना आशीर्वाद प्रदान किया। ऋषिलंगर के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

–सूर्यकान्त मिश्र

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट नागपुर के द्वारा

आर्य जगत् के सर्वोच्च पुरस्कारों के लिये जीवन दानियों–विद्वानों एवं भजनोपदेकों से आवेदन पत्र आमंत्रित ।

1) आर्य रत्न पुरस्कार सू. सं. 1960853113.14.15.16 के लिये पुरस्कार संख्या 4 प्रत्येक पुरस्कार एक लाख रुपया 100,00,00 चार विद्वान् जीवन दानियों से आवेदन पत्र आमंत्रित है, जिनका पुरा जीवन परोपकार, त्याग, तपस्या, समाज सेवा, योग, शिक्षा, गौसंवर्धन एवं आर्ष प्राच्यविद्या, के प्रसार व प्रचार मे नैष्ठिक जीवन के साथ निस्वार्थ भाव से उल्लेखनीय योगदान रहा है।

2) आर्य विभूषण पुरस्कार सू सं. 1960853114.15.16 के लिये पुरस्कार संख्या 3 प्रत्येक पुरस्कार 51000.00 रुपया इक्यावन हजार रुपयों का, उन विद्वानों को दिया जायेगा, जिनका पूरा जीवन वेद–प्रचार, प्रसार, लेखन, वैदिक साहित्य लेखन, व समाज सेवा मे लगा हो।

3) आर्य गौरव पुरस्कार सु. सं. 1960853114.15.16 के लिये पुरस्कार संख्या 3 प्रत्येक पुरस्कार 21000.00 इक्कीस हजार रुपयों का, यह पुरस्कार उन भजनोपदेशकों प्रचारकों को दिया जायेगा जिनका पूरा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में लगा रहा है।

4) आवेदन पत्र स्वयं या विद्वान् के निकटतम जीवन से परिचित, व्यक्ति द्वारा भी दिया जा सकता है प्रत्येक आवेदन पत्र के साथ विद्वान् के निकटतम जीवन से परिचित व्यक्ति का अनुमोदन भी साथ आना आवश्यक है।

सभी प्रस्ताव अनुमोदन के साथ ट्रस्ट के नीचे लिखे पते पर चयन–समिति के पास 30 सितम्बर तक पहुँच जाने चाहिये। बाद में आये प्रस्तावों पर विचार नहीं होगा। पुरस्कारों के लिये आये आवेदन पत्रों पर चयन–समिति का निर्णय ही अन्तिम मान्य होगा।

पत्ता –
पुरस्कार चयन–समिति
राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट, 387, आर्योदय रुईकर मार्ग महल,
नागपुर–440032 (महाराष्ट्र)
–राव हरिश्चन्द्र आर्य (मैनेजिंग ट्रस्टी)

पुस्तक विमोचन

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर के वरिष्ठ सदस्य श्री सुरेन्द्र मोहन गुप्ता जी द्वारा लिखित पुस्तक "हिन्दूत्व पर महात्मा गान्धी के विचार" पठनीय पुस्तक है। इसमें प्रमाण के साथ विषय वस्तु की स्थापना की गई है, पुस्तक लघुकाय होने पर भी उपयोगिता की दृष्टि से अत्यन्त उपादेय है। पुस्तक का विमोचन महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. ने किया। पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रकाशित है। एक बार अवश्य पढ़े।

जून –2015 के आर्थिक सहयोगी

आर्य स्त्री समाज, अशोक विहार फेज–1, दिल्ली	वार्षिक सहयोग	6000/–
श्री गुरुदत्त तिवारी जी, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली		5000/–
श्रीमती स्वतन्त्रलता शर्मा जी, बसन्त नगर बगलौर	त्रैमासिक	1500/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सै. 15, फरीदाबाद हरियाणा	मासिक	1000/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी, महामंत्री, शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्रीमती संतोष चधवा जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली		500/–
श्रीमती नीता खन्ना जी, आर्य समाज कालका जी, नई दिल्ली		500/–
श्री देवेन्द्र कुमार नहार जी, ग्राम–बिनोली जि. भिकिया सेन		100/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

श्री दीपक महाजन जी सैक्टर–12, द्वारका नई दिल्ली		1500/–
(स्व. पज्य पिताजी की स्मृति में)		
कुमारी गरिमा जी, बी–2 ब्लाक पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/–
डा. पुष्पलता वर्मा जी, प्रधान आर्य समाज, बाहरी रिंग रोड विकासपुरी	मासिक	50/–
श्रीमती ऊषा कुकरेजा जी, आर्य मसाज, बाहरी रिंग रोड़ विकासपुरी	मासिक	50/–
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, आर्य मसाज, बाहरी रिंग रोड़ विकासपुरी	मासिक	50/–
श्री सुखदेव महाजन जी, आर्य मसाज, बाहरी रिंग रोड़ विकासपुरी	मासिक	50/–
श्री विपिन चन्द सरीन जी, आर्य मसाज, बाहरी रिंग रोड़ विकासपुरी	मासिक	50/–
श्री यशपाल आर्य जी, कृष्णा पार्क, तिलक नगर, नई दिल्ली		50/–

वैदिक विद्वान् डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया के 75वें जन्मदिवस (01 जूलाई) पर विशेष

दीया बनके जले जो सबके प्रकाश के लिए,
हृदय में भव्य भावना सबके विकास के लिए
कलम जिनकी चलती रही सुन्दर इतिहास के लिए
डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया समर्पित व्यक्तित्व
साहित्य सृजन में रहें सजाएं सबके विश्वास के लिए।।

प्रखर प्रबुद्ध, विद्यावान और ज्ञानवान हैं आप,
संस्कृति के धरोहर की विशिष्ट पहचान हैं आप
जन–जन के बीच हार्दिक सम्मान हैं आप
उदारमना सकंल्प शील अनवरत गतिमान हैं आप।।

आप जनता की वाणी के अनूठे कलमकार है,
परम नियन्ता के सत्य को शब्द बद्ध करें वो साहित्यकार है
आप–वाचा–कर्मणा–कलम से करते उपकार हैं
आपकी साहित्यक रचनाएं ज्ञान से समृद्ध अनमोल उपहार हैं।।

जीवन के इस अमृतोत्सव पर, आपका भव्य जज्मान है
आपके कार्यों के प्रति हम सभी अति श्रद्धावान हैं
आपके मंगलमय, स्वस्थ जीवन के लिए यह अनुष्ठान है
बड़ी श्रद्धा प्रेमानुराग शुभकामनाओं सहित हमारा प्रणाम है।।

–विजय गुप्त, साहित्यकार
एफ 1/335 मदनगीर नई दिल्ली–62

आवश्यकता है !

1. पूर्णकालिक फिजिशियन की ।
2. पूर्णकालिक प्रशिक्षित नर्स की इन पदों के लिए निवास एवं भोजन की व्यवस्था निःशुल्क होगी।

आवेदन करें।

प्रधाना, आर्य महिला आश्रम
दुर्गा कालोनी, न्यू राजेन्द्र नगर, रिज रोड़, नई दिल्ली–110060
फोन : 28741786

Thearyasamaj.org

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-7-2015 Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 066/2015-17
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार
जुलाई – 2015

ओ३म् का चिन्तन

–आदर्श सहगल

ओ३म् परमात्मा का निज नाम है ओ३म् ही सृष्टि का प्रथम शब्द है, बाकी सब उसके गुणों के आधार पर हैं जैसे अजर, अमर, अभय, न्यायकारी सत्य स्वरूप, दयालु इत्यादि। ओ३म् ही सारे संसार का प्राण है। सृष्टि की उत्पत्ति के समय सबसे पहले जो नाद सुनाई दिया वह ओ३म् ही था। कठोपनिषद् में भी आचार्य यम ने नचिकेता को उपदेश देते हुए कहते हैं "सर्वे वेदाः यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि यद् वदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पद संग्रहेण ब्रवीमोमित्येतत्" अर्थात् जिस ओ३म् का वेद और शास्त्र गुणगान करते हैं, जिसको प्राप्त करने के लिये ऋषि मुनि विद्वान्, ब्रह्मचर्य और साधनों का अनुष्ठान करते हैं वह केवल ओ३म् है ओ३म् में महर्षि दयानन्द जी ने भी सत्यार्थ प्रकाश में ओ३म् अर्थात् –

अ – अकार से "विराट अग्नि विश्व आदि"

इ – उकार से "हिरण्यगर्भ, वायुतेजस आदि"

म – मकार से " ईश्वर आदित्य प्राक्षादि है"

अ. से हमारा मुख गोल आकार में खुला रहता है वह परमात्मा हमारी सृष्टि का प्रारम्भरचना का प्रतीक है ।

उ. अकार से परमात्मा हिरण्यगर्भ है जिसमें सारा संसार समाया है। उसके गर्भ में सूर्य, चन्द्रमा प्रकाश करने हेतु सूर्य चन्द्रमा समाये हुये हैं। वह सारे संसार को धारण करने वाला है। वह स्वयं प्रकाश स्वरूप है। वह परमात्मा हमारा धारक और पालक है।

म – मकार से हमारे होठ बंद हो जाते हैं अर्थात् वह सृष्टि का संहारक है। वह अन्त का प्रतीक है यही ओ३म् हमारा उत्पादक है, पालक है और संहार करने वाला है। इसलिये हम सदैव ओ३म् का ही ध्यान करके ओ३म् का ही जाप करें।

हम सोते उठते बैठते ओ३म् को ही जाप करें वह चारों ओर विद्यमान है। वह ओ३म् कण–कण में समाया हुआ है फलों में फूलों में वनस्पतियों में वह ओ३म् ही सर्वशक्तिमान् है दयालु है वही हमारा सहारा है किनारा है। वह प्रभु ही हमारा सुख दुःख में साथी है। ओ३म् के जाप से ही अपने मन को वश में रख सकते हैं। ओ३म् मन्त्र बोलने से हमें आनन्द आने लगता है। "ओ३म् ऋतो स्मरे," हे कर्मशील मनुष्य तू सदैव ओ३म् का ही जाप कर जब बच्चा इस संसार में आता है तो सबसे पहले उसके मुख के अंदर सोने की सलाई से शहद लगाकर ओ३म् लिखते हैं और कहते हैं कि हे ! बालक तूं सदैव ओ३म् का ही ध्यान करना और ओ३म् के सहारे ही अपना जीवन व्यतीत करना।

हे बालक तू गुणकारी, सदाचारी बनना, तेरी वाणी में शहद जैसी मिठास हो, तेरा आना–जाना मधुर हो तेरे अन्दर सोने जैसी चमक हो तू अपने गुणों से सबको प्रभावित कर सके, सोने का एक और गुण भी है सोने की भस्म भी बनाई जाती है जिससे कई बिमारियाँ भी दूर होती हैं। हमे ओ३म् का ऊँचे स्वर में अर्थात् उद्गीथ को गायें जिससे हमारी आत्मा पवित्र होती है। उस परमात्मा का सानिध्य मिलता है, हमें आत्मिक बल मिलता है। वह परमात्मा हमारी हर समय रक्षा करता है, मनुष्य को वेदों का वरदान देने वाला ओ३म् ही है। ओ३म् की महिमा तो कृष्ण जी ने भी गीता में गाकर सुनाई है। ओ३म् का उच्चारण करने से हमारी अंदर की सारी शक्तियाँ जागृत होती हैं। हमारे अंदर का अंधकार अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि दूर भागने लगते हैं उसके स्थान पर, करुणा, दया, ममता आने लगती है हमारी आत्मा को तृप्ति होने लगती है। जैसे सूखे पेड़ पर वर्षा की बूंद पड़ने से वह पेड़ हरा भरा हो जाता है उसमें फल–फूल आने लगते हैं वह नाचने लगते हैं मानो वह भी परमात्मा का धन्यवाद करने लगते हैं ओ३म् के जाप से हमें ऊर्जा मिलने लगती है। और हम पर प्रभु की कृपा बरसने लगती है। और हमें उस प्रभु की अमृतमयी छाया मिलने लगती है तो क्यों न हम उस ओ३म् के सानिध्य में बैठकर हम भी अपने मन को रोपें ताकि हमारी आत्मा जो कई जन्मों से अपने प्रियतम से बिछड़ी हुई है तड़प रही है वह तृप्त हो जायेगी। ओ३म् ही हमारी माता–पिता बन्धु सखा है। वह तीनों कालों में विद्यमान है, सत्य स्वरूप है हमारे सिख भाई भी ओंकार बोलते है। ओ३म् एक निराकार शक्ति है जो हमें आकार देती है हमारी मानसिक शक्तियों से हमारा परिचय भी करवाती है। हम भी उस ओ३म् नाम का दीपक जलाये अपने अन्दर से सब बुराईयों को दूर कर सबसे प्रेम करें। सबसे प्रेम करना है। परमात्मा से प्रेम करना अर्थात् सच्ची भक्ति यही है क्योंकि वह परमात्मा ही सबमें समाया है।

वह प्रभु तो हमें बार–बार पुकार रहा है वह हमें अपनी अमृतमयी गोद में बिठाकर हमें वेदों का सत्य का अमृत पिलाना चाहता है सोम रस देना चाहता है उसकी अमृतमयी छाया तो सदैव बरस रही है, वह तो सदैव हमारी चारों ओर से रक्षा करता है, तो क्यों न हम उसकी आराधना करें हम उस पिता को मनायें ध्यायें, उसके अंदर से जो हमें हर समय आवाज देता है उसे सुनें और सब प्राणियों को सुख दे सकें। हम सच्चे हृदय से उस को पुकारें वह जरुर हमारी प्रर्थाना को सुनेगा हमें आत्मिक बल देगा इस लिये किसी कवि ने लिखा है:– किन अनजान तरीकों से,
वह पूर्ण कामना करता है।
नहीं जानती पर इतना है,
निश्चय पूरी करता है।
मिले सूचना कब यह उस से,
बात तुम्हारी सुनी गई।
नहीं पता पर देर सवेरे,
निश्चय सबकी सुनता है।
चिन्ता क्यों इस बात की छोड़ो,
जितना मांगू क्या उतना देता है।
मुझसे अधिक दान हो उसको,
जो अच्छा वो देता है।
इसलिये मैं स्तुति प्रार्थना कर,
छोड़ उसी पर देती हूं।
धैर्य प्रतीक्षा सत्य भाव से कर,
सुख की सांसे लेती हूं।

यह तभी होगा जब हम पूर्ण रूप से उस प्रभु पर समर्पित होगें हम सोते उठते बैठते ओ३म् का ही जाप करें वह चारों ओर विद्यमान है। वह ओ३म् कण–कण में समाया हुआ है फलों में फूलों में वनस्पतियों में। वह सर्वशक्तिमान् है दयालु है। ओ३म् ही हमारा सहारा है किनारा है यही हमारा सुख दुःख में साथी है। ओ३म् के जाप से हम अपने मन को भी वश में कर सकते हैं। ओ३म् शब्द बोलने से ही आनन्द आने लगता है। ओ३म् क्रतो स्मर हे ! कर्मशील मनुष्य तू सदैव ओ३म् का जाप कर।

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23847244 से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

Thearyasamaj.org

क्या बहुरूपिये से भी गये-बीते हो?

–महात्मा आनन्द स्वामी जी

राजा का दरबार लगा था। सब अमीर और मन्त्री आदि बैठे थे। सहसा एक प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत हुआ, जिसपर आज्ञा लिखकर सुनाई गई कि बहुरूपिये को आज्ञा दी जाती है कि यदि वह राजा साहब को धोखा, चकमा दे सके तो उसे मुँह माँगा इनाम दिया जाएगा।

यह आज्ञा सुनकर बहुरूपिया वापस लौट गया। उसने नित नये वेष बदले। कई-कई प्रकार के रूप बनाये, परन्तु राजा पहचानता ही रहा। अन्ततः बहुरूपिया तंग हो गया और कुछ समय के लिए अदृश्य हो गया।

कुछ दिनों के पश्चात् नगर में यह समाचार प्रत्येक के द्वारा सुना गया कि बाहर नदी के पार जंगल में एक बड़ा तपस्वी और योगी साधु आया हुआ है, जो बड़ा वैरागी है, पूरा योगी है। त्याग की तो मूर्ति है। जनता से ये प्रशंसाएँ सुनकर झुण्ड-के-झुण्ड साधु के पास पहुँचने लगे। ठट्ठ-के-ठट्ठ वहाँ दिखाई देने लगे। जंगल में मंगल हो गया। जहाँ गीदड़ बोलते थे, वहाँ दिन-रात एक बस्ती-सी बसी दिखाई देने लगी। होते-होते धनाढ्य और मन्त्री भी दर्शनों को पहुँचे। त्याग की मूर्त्ति को देखकर इनके दिल भी पिघल गये। दरबार में आते ही राजा से कहा-"महाराज! पास के जंगल में एक बड़ा त्यागी योगी ठहरा हुआ है, उसके दर्शन अवश्य करने चाहिएँ।"

अगले दिन सारे शहर में प्रसिद्ध हो गया कि राजा साहब त्यागी योगी के दर्शन के लिए जाएँगे। जंगल तक सड़कें साफ हो गईं। नदी का पुल ठीक किया गया। मार्ग में सजावट की गई। प्रातः काल होते ही राजा साहब अपनी रानी के साथ जंगल की ओर चल दिये। शोक की दृष्टि दूर से ही योगी को देखने लगीं। रानी ने साधु के पास पहुँचते ही अपने गले का हार उतार कर साधु के हाथ पर रख दिया। राजा ने भी साधु के चरणों में झुककर नमस्कार किया। साधु ने वह बहुमूल्य हार बड़ी लापरवाही से धूनी में फेंक दिया। किसी का साहस नहीं हुआ कि उसे उठाये और देखते-ही-देखते वह जलकर राख हो गया। राजा और रानी यह दृश्य देखकर और भी मुग्ध हो गये। राजा बार-बार अपना सिर झुका रहा था।

जब वह विचित्र दृश्य दिखाई दे रहा था, उसी समय एकदम साधु ने छलांग लगाई और धूनी से बाहर होकर अपनी दाढ़ी उतार फेंकी, सिर के लम्बे बालों की जटा दूर रख दी। मुख को साफ करके और राजा के सामने झुककर विनय की- "महाराज! पुरस्कार दिलवाइए।" राजा चकित रह गया और हँसकर कहा- "तुम भी विचित्र मूर्ख हो। लाख रुपये का हार अग्नि में जलाकर पुरस्कार माँगते हो। क्या वह थोड़ा पुरस्कार था?"

बहुरूपिया- महाराज! मैंने साधु का वेश धारण किया हुआ था। इस वेश को मैं कलंकित नहीं कर सकता था। मैंने उस वेश की लाज रक्खी। यदि उस समय मैं ग्रहण कर लेता तो साधु का वेश कलंकित हो जाता और मैं अपने बहुरूप में भी पूरा नहीं उतरता।

इस कहानी को पढ़कर कुछ समझे भी। कुछ जाना भी कि यह क्यों लिखी गई है। यह इसलिए लिखी गई, जिससे वे लोग जो सच्चे आर्य नहीं बने या नहीं बन सकते, कम-से-कम आर्य नाम की तो लाज रक्खें। आर्य के पवित्र शब्द को तो कलंकित न होने दें। क्या हम बहुरूपिये से भी गये बीते हैं, जिसने साधु के वेश की लाज रक्खी।

परन्तु आज हम आर्य बनकर भीरुओं, डरपोकों से भी गये-बीते हैं। हम तनिक-तनिक-से लोभ के लिए क्या कुछ नहीं कर डालते। आर्य तो वह है, जो परमात्मा का पुत्र है तथा सदा अभय रहता है। संसार में कमल के फूल की भाँति रहता है, परन्तु आह! हम सदा डर और संकटों से काँपते रहते हैं। छोटी-छोटी-सी आपत्तियाँ हमें भीरु बना देती हैं। हम सांसारिक सुख के लिए आर्यधर्म का कोई ध्यान नहीं रखते। ऐसी अवस्था में आज सोचो और बार-बार सोचो कि क्या बहुरूपिये से भी गये-बीते हैं या नहीं और आर्य-जैसे पवित्र शब्द को भी कलंकित कर रहे हैं या नहीं?

संतान को देकर जाएं

1. हम अपने माता पिता होने का दायित्व बड़ी कुशलता से निभाते हैं। अपने बच्चे को योग्यतम शिक्षा और ज्ञान देकर समाज में सम्मान के साथ रहने के लिए उसे उचित मार्ग दर्शन देते हैं। जिसके आधार पर वह अपनी योग्यता से वो सब कुछ अर्जित करने की क्षमता और सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है जो आप उसे देकर जाने वाले हैं।

2. लेकिन क्या कभी आपने यह सोचा है कि आपके असहाय होने पर आपकी मृत्योपरान्त उसे जिसकी सबसे अधिक आवश्यकता पड़ेगी वह आपने अपने बच्चे को दिया है क्या ?जिसे वह जीवन में कभी स्वयं अर्जित नहीं कर सकता।

3. क्या आपने उसे जेनेटिक (जीन्स) रक्त सम्बन्धों की श्रृंखला के पारिवारिक सम्बन्ध देने के विषय में कभी सोचा है।

4. जिस दिन आप "एक ही बच्चा" रखने का निर्णय लेते हैं, उसी दिन आप अपने बच्चे के समस्त पारिवारिक, सामाजिक और रक्त सम्बन्धों के भावनात्मक एवं मानवीय सम्बन्धों को मार देते हैं।

5. वास्तव में परिवार में बच्चे को अकेला रखने के दुष्प्रभाव से हमारा ध्यान भंग है। हम कमाने के चक्कर में अपने संतान के स्वाभाविक रक्त सम्बन्धों की हत्या कर रहे हैं।

6. हमारी इकलौती संतान के समस्त जेनेटिक, सामाजिक रिश्ते जैसे सगे भाई, बहन, चाचा, ताऊ, मौसा, मौसी, मामा, आदि समाप्त हो रहे हैं। सारा पारिवारिक व सामाजिक तानाबाना छिन्न-भिन्न होने लगा है। रिश्ते सिमटने लगे हैं, व्यक्ति एकाकी जीवन की ओर अग्रसर होने लगा है।

7. परिणाम स्वरूप डिप्रेशन, आत्महत्या और एकाकी जीवन जीने वाले वृद्धों की हत्याओं, कोर्ट में जमानत, अर्थों में कंधा, फ्लैटों में सड़ती हुई लाशें और लड़की के अपहरण में कोई साथ नही जैसे उदाहरण सामने आने लगे हैं।

8. हमने बच्चे को खिलौना समझ लिया है। खिलौना नही है वह। अपने आप में पूर्ण व्यक्तित्व है वह। सारे व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्धों की आवश्यकता है उसे। आप उसे दे नही रहे और वह स्वयं अर्जित नही कर सकता।

9. हमारा भाई है हमारी बहन है हमारे चाचा, मामा आदि भी हैं क्या हमारी संतान या उसकी भावी पीढ़ी को इन सब रिश्तों की आवश्यकता कभी महसूस नहीं होगी। कितने अदूरदर्शी हैं आप। आप सोचें जब आप इस संसार में नहीं होंगे इन रिश्तों की अहमियत तब पता चलेगी।

10. अपने सुख के लिए, सुविधाओं को अर्जित करने के लोभ में हमने "एक ही संतान" का निर्णय तो ले लिया लेकिन जिस समाज में हमारी संतान रहेगी उसे कौन चलायेगा। कभी सोचा है। जब हमारी इकलौती संतान अपने वयस्क अवस्था में होगी तब समाज का कैसा रूप होगा इसकी परिकल्पना करके देखें। तब आपको लगेगा कि आपका यह "एक संतान" का निर्णय आपकी इकलौती संतान के लिए और राष्ट्र के लिए कितना भयावह निर्णय है।

आज ही संज्ञान लें

अपनी इकलौती संतान को सम्पूर्ण पारिवारिक सम्बन्ध दें।

संकल्प करें : "हम अपनी संतान को भाई भी देंगे बहन भी देंगे"

रामकृष्ण श्रीवास्तव, महामंत्री,
विश्व हिन्दू परिषद, दिल्ली
9555668080,

गुरुकुल खेड़ा खुर्द दिल्ली-82 में अध्यापक की आवश्यकता

गुरुकुल खेड़ा खुर्द दिल्ली-82 में कक्षा 6 से लेकर शास्त्री तक के छात्रों को अंग्रेजी, विज्ञान, हिन्दी व गणित पढ़ाने के लिए एवं बच्चों की देखरेख करने हेतु संरक्षक की आवश्यकता है। वेतन के साथ-साथ भोजन, वस्त्र, दूध आदि की सुविधा दी जाती है। इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें।

प्राचार्य – आचार्य सुधांशु – 9350538952, 8800443826

Thearyasamaj.org

पक्षिक व सरकारों की मर्जी से एकता का सूत्र अपनाया व एक हो गए। फ्रांस के प्रधानमंत्री श्री रावर्ट शूमेन द्वारा दोनों देशों की एकता से यूरोपियन यूनियन में शांति का वातावरण बनाने में काफी बढ़ावा मिला।

(12) हमने इतिहास में देखा है कि केवल तीन अवसरों पर (1) लीग ऑफ नेशन्स के गठन में (2) संयुक्त राष्ट्र संघ के गठन में व (3) यूरोपियन यूनियन के गठन में विश्व के देशों ने मिलकर एकता अपनायी है। और प्रत्येक बार वे इसलिए सफल रहे क्योंकि 'एक व्यक्ति', जो अपने आप पर विश्वास रखता था, जिसके हृदय में पवित्र इच्छा थी, ने आगे बढ़कर सभी विश्व के नेताओं की एक बैठक बुलाई। हमारा मानना है कि विश्व के नेताओं की बैठक बुलाना आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है, जिसका कि अब समय आ गया है। इसकी पहल भारत के शीर्ष नेतृत्व तथा प्रत्येक भारतीय को करनी है। मेरे व मेरे साथ सी.एम.एस. के लगभग 50,000 छात्रों की शुभकामनाएँ व बधाइयाँ आपके साथ हैं। हमारा मानना है कि न केवल भारत के बल्कि विश्व भर के बच्चे अपने सुन्दर एवं सुरक्षित भविष्य के लिए भारत की तरफ बड़ी आशाओं के साथ देख रहे हैं।

(13) भारतवर्ष अनेकता में एकता से ओतप्रोत लघु विश्व का स्वरूप है - भारत एक विविधतापूर्ण देश है। धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, आर्थिक तथा भौगोलिक आदि विविध दृष्टियों से भारत में भी अनेकता दृष्टिगोचर होती है। यहाँ कुछ प्रदेश ध्रुव प्रदेश के समान ठण्डे हैं तो कुछ प्रदेश अफ्रीकी रेगिस्तानों जैसे गर्म एवं शुष्क है, कहीं वर्षा की अधिकता है, तो कहीं लोग वर्षा की बूँद-बूँद को भी तरस जाते हैं। कहीं आकाश छूते पहाड़ हैं, तो कहीं समतल मैदान, कहीं रेगिस्तान हैं, तो कहीं हरी-भरी उपजाऊ भूमि। यहाँ विविध धर्मों, सम्प्रदायों, जातियों एवं धार्मिक आस्थाओं के लोग रहते हैं, अनगिनत भाषाएँ बोली जाती हैं, हर प्रदेश का अपना-विशिष्ट भोजन है, रहन-सहन है, रीति-रिवाज है, किन्तु बाह्य रूप से दिखलाई देने वाली इस अनेकता के मूल में एकता ही निहित है। भारत विश्व का सबसे महत्त्वपूर्ण धर्मनिरपेक्ष प्रजातान्त्रिक राष्ट्र है। हमारे देश में अनेक राज्य हैं तथा उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक इसका विस्तृत भू-भाग है। हम यह कह सकते हैं कि राष्ट्र रूपी शरीर के विभिन्न अंग हमारे अलग-अलग प्रदेश हैं तथा शरीर को पूर्णरूपेण स्वस्थ रखने के लिए सभी अंगों का स्वस्थ तथा सुदृढ़ होना आवश्यक है। भारत एक लघु विश्व का स्वरूप धारण किये हुए है। भारत की अवधारणा है- वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात सारी वसुधा एक विश्व परिवार है।

'योग स्वस्थ जीवन का आधार एवं ईश्वर साक्षात्कार का साधन'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

वैदिक साहित्य योगदर्शन वेद का उपांग कहा जाता है। यह वेद के 6 उपांगों योग, सांख्य, वेदान्त, वैशेषिक, न्याय और मीमांसा में से एक है। योग दर्शन के प्रवक्ता व ग्रन्थकार महर्षि पतंजलि हैं। जिस प्रकार से गोपालक गो का दुग्ध दुहते हैं उसी प्रकार से हमारे 6 दर्शनकारों ने वेद रूपी माता से उसके योग आदि दूध को दुहा है। योग दर्शन का उद्देश्य बताते हुए महर्षि पतंजलि ने कहा है कि मनुष्य के चित्त में जो विलिप्त व अविलिप्त पांच वृत्तियां **प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा व स्मृति** हैं, उनका निरोध, रोकना या उन्हें नियंत्रित करना योग है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आठ सोपान बताये गये हैं जिनमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि हैं। यम पांच हैं जिसके अन्तर्गत अंहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह आते हैं। नियम भी पांच हैं जिनमें शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्रणिधान आते हैं। अतः योग में सफलता की प्राप्ति के लिए यम व नियमों को जानना व उनका पालन करना आवश्यक है। इनके पालन के बिना चित्त की वृत्तियों का निरोध किया जाना सम्भव नहीं है। यदि हो सकता होता तो फिर इन्हें योग के अंगों के आरम्भ में ही बताने की आवश्यकता नहीं थी। योगाभ्यासी को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह के साथ शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर–प्रणिधान पर भी ध्यान देना चाहिये। योग के लक्ष्य समाधि की प्राप्ति के लिए यात्रा आरम्भ हो चुकी है और हम यम व नियम रूपी पहले दो स्टेशन पार चुके हैं। अब आसनों का स्थान आता है। आजकल भिन्न भिन्न योगाचार्य, मुख्यतः स्वामी रामदेव जी देश विदेश में घूम कर व टीवी चैनलों के द्वारा निरन्तर योगासनों का प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने योगासनों व इसके कुछ अन्य अंगों को देश–विदेश में लोकप्रिय बनाने में विशेष भूमिका निभाई है। आज 21 जून को विश्व भर में जो अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है, उसमें उनकी बहुत बड़ी भूमिका व योगदान है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के इस अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के प्रति सफल प्रयासों के पीछे सम्भवतः उन्हीं की प्रेरणा है। योग को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान कराने के लिए इन दोनों विभूतियों के लिए सारा देश इनका कृतज्ञ है। यह ध्यातव्य है कि प्रधानमंत्री जी के संयुक्त राष्ट्र संघ में 21 जून को योगदिवस घोषित करने के प्रस्ताव का 177 देशों ने समर्थन किया था और आज विश्व के 193 देशों में यह योग दिवस पूरे जोश व उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

हम योगासनों की चर्चा कर रहे थे। योग आसनों से आज विश्व का सम्भवतः प्रत्येक मानव परिचित हो गया है। योगासनों से पूरा शरीर, प्राण, मन, बुद्धि व आत्मा लाभान्वित होती है। यह अब सिद्ध होने के साथ सर्वविदित भी हो चुका है। योगाभ्यास से शरीर को स्वस्थ रखने, शरीर को बलशाली बनाने, तनाव आदि को दूर करने तथा रोगों के उपचार आदि में भी आशातीत सफलतायें प्राप्त हुई हैं। हम समझते हैं कि आज का दिन ऐतिहासिक दिन है और यह सारे विश्व में सभी मानवों को योग में प्रवृत्त करने की एक सफल शुरूआत है। यह शुरूआत इतनी प्रभावशाली है और योग का अपना इतना सकारात्मक प्रभाव है कि जो लोग किन्हीं कारणों से न नूच कर रहे हैं वह शीघ्र ही योग को पूरी तरह से अपनायेंगे क्योंकि बिना योग के जीवन व विश्व निरोग, सुखी, शान्त, कल्याणप्रद व उन्नत नहीं किया जा सकता। वर्तमान में योग **वसुधैव कुटुम्बकम्** का आधार बन गया प्रतीत होता है। जिस प्रकार से हम रोग होने पर विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों में भेद न कर जिससे लाभ होता है, उसे ही अपनाते हैं तथा विज्ञान के आविष्कारों को भी बिना किसी भेदभाव के स्वीकार करते हैं वैसा ही योग भी अखिल विश्व में अपना लिया गया है और अब यह संसार के सभी मनुष्यों को जोड़ने का कार्य करेगा। भविष्य में अनेक शुभ परिणाम भी सामने आयेंगे, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

प्राणायाम से सभी परिचित हैं। प्राणायाम का मुख्य कार्य श्वास प्रश्वास को अपनी इच्छानुसार रोकना या उसमें अन्तर डालना है। प्राणायाम की स्थिति सिद्ध होने पर विवेक ज्ञान पर पड़ा हुआ आवरण या पर्दा क्षीण हो जाता है। प्राणायाम के अभ्यास से प्राणायाम के अगले अंग धारणा सहित अन्य योगांगों धारणा, प्रत्याहार, ध्यान व समाधि के सुविधापूर्वक अनुष्ठान में मन की क्षमता निश्चित उभर आती है। तात्पर्य यह है कि प्राणायाम के अनुष्ठान से मलों के दूर हो जाने पर निर्दोष व शुद्ध चित्त धारणा आदि अंगों के अनुष्ठान में लगने लगता है। मन–चित्त की यह योग्यता व क्षमता प्राणायाम से ही उभरती है। **इसीलिये प्राणायाम को प्रधान योगानुष्ठान की आधारशिला माना गया है।** इसके लिए योगदर्शन के साधनापाद के सूत्र 53 का **'धारणासु च योग्यता मनसः'** का अध्ययन करना चाहिये। योग का एक अंग प्रत्याहार है। यह प्रत्याहार पांच ज्ञान इन्द्रियों का अपने विषय रूप, रस, गन्ध, शब्द व स्पर्श के प्रति जो सम्बन्ध होता है उसका पूरी तरह से असम्बद्ध हो जाना अर्थात् मन वा चित्त के वश में होने की अवस्था 'प्रत्याहार' है। ध्यान, मन में इन्द्रियों के पांचों विषयों से रहित होने को कहते हैं। इस अवस्था में आकर ईश्वर को नाम ओ३म् वा गायत्री मन्त्र का अर्थ सहित जप करने से ध्यान होने के साथ समाधि अवस्था प्राप्त होती है। यह वह अवस्था होती जब विवेक उत्पन्न होकर ईश्वर का साक्षात्कार होता है। मनुष्य जीवन की यही सबसे बड़ी सफलता है। यह स्थिति प्राप्त होने पर योग का अन्तिम लक्ष्य समाधि प्राप्त होने के साथ मनुष्य को ईश्वर में निहित आनन्द की स्थिति का अनुभव होता है और वह स्वयं भी इस आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है। **यह ईश्वरीय आनन्द ऐसा है कि इसकी उपमा संसार के किसी सुख से नहीं दी जा सकती है।** हमें मनुष्य जीवन मिला ही योगाभ्यास द्वारा समाधि अवस्था को प्राप्त होकर ईश्वर का साक्षात्कार करने, दुःखों से निवृत्त होने, पूर्णानन्द के भोग व मोक्ष की प्राप्ति के लिए है। आज संसार ने इस योग मार्ग पर चलना आरम्भ कर दिया है, यह प्रसन्नता की बात है। इससे बढ़कर और कोई शुभ बात हो ही नहीं सकती।

इस लेख में हम यह भी बताना चाहते हैं कि महर्षि दयानन्द ईश्वरीय ज्ञान वेदों के अपूर्व विद्वान और योग विधि से ईश्वर उपासना करने वाले पूर्ण सिद्ध योगी थे। उन्होंने जीवन में वेदादि साहित्य का अधिकतम् ज्ञान प्राप्त कर पंचमहायज्ञों की पुस्तक **'पंचमहायज्ञ विधि'** लिखी है। यह पंच महायज्ञ सृष्टि के आरम्भ से ही प्रचलित रहे हैं। महाभारतकाल व बाद में इसमें व्यतिक्रम उपस्थित हुआ। पंचमहायज्ञों में पहला महायज्ञ ब्रह्मयज्ञ वा ईश्वरोपासना है। यह और कुछ न होकर योगदर्शन से पुष्ट ईश्वर प्राप्ति की योग विधि की साधना ही है जिससे चित्त की सभी वृत्तियों वा दोषों का शमन होता है और समाधि अवस्था को प्राप्त होकर ईश्वर का साक्षात्कार हो सकता है। महर्षि